SEMESTER-2, By- Dr. Shyam Bihari Chaudhary

Page (1)

Date 29.04.20

Topic- सेवारत अध्यापक शिक्षा प्रत्यय

Concept of in Service Teacher Education

व्यावसायिक अध्यापकों एवं अन्य अध्यापकों को उनके व्यवसाय से सम्बन्धित निरन्तर जानकारी प्रदान करना एवं व्यावसायिक गुणों तथा कौशलों मे सुधार एवं विकास करना आता है।

शिक्षण व्यवसाय मे प्रवेश करने के पश्चात उनके लगातार विकास के लिये उचित अनुदेशन को सुनिश्चित ढंग से दिये जाये। जिससे कि अध्यापकों के अन्दर व्यावसायिक गुणो का विकास किया जा सके।

एम. बी. बुच के अनुसार

सेवारत अध्यापक शिक्षा एक क्रिया बद्ध योजना है, जिसका उद्देश्य शिक्षक के निरन्तर विकास से है इसमे शिक्षक का स्वयं एवं शैक्षिक विकास किया जाता है।

In Service education is thus, a Programme of activities aiming at the continuing growth of teachers and educational Personael in Service

— M. B. Buch

व्यावसायिक सदस्यों मे नयी चेतना, विकास, बोध एवं सहयोग की कियाओं का विकास होता है। शिक्षकों मे ऐसी भावना पैदा करना होता है जिससे कि वे अपने हर संभव सुधार एवं विकास कर सके

कैन (1969) के अनुसार

1) व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त करना
2) कौशल का विकास करना
3) व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति उत्पन्न करना
4) व्यवसाय से सम्बन्ध रखना
5) व्यावसायिक कौशल (प्रशासकीय कौशल, प्रबन्धकीय कौशल व्यवस्थापकीय कौशल, नेतृत्व कौशल आदि) का विकास करना
6) शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना
7) पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमे शिक्षण विधियो को सम्मिलित किया हो जो शोध कार्यो पर आधारित है तथा
8) अन्य कार्य (सेमीनार, सिम्पोजियम, गोष्ठी, वार्तालाप आदि) को व्यवस्थित करना है।

Scanned with CamScanner